वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:5 अंक: 257 शुक्रवार 6 फरवरी 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

@ पेज 2 पर

मुख्यमंत्री ने इंडिया स्टोनमार्ट का किया उद्घाटन- राजस्थान के पत्थरों की विश्व में अनूठी पहचान

प्रदेश के पत्थर उद्योग को देश में सिरमौर बनाएंगे: भजनलाल

इंडिया स्टोनमार्ट प्रदर्शनी नए राजस्थान के संकल्प का प्रतीक

मुख्यमंत्री ने स्टोन क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले उद्यमियों को किया सम्मानित

उद्योग अब नई ऊंचाइयां छूने को तैयार

राजस्थान निवेश के लिए सबसे सुरक्षित और बेहतरीन जगह

जयपुर. कासं

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राजस्थान के पत्थरों की विशिष्टता की विश्व पटल पर अनूठी पहचान है। देशभर के अनेक प्रतिष्ठित संस्थानों, किलों, महलों में राजस्थान का पत्थर उपयोग में लाया गया है। अब राजस्थान का पत्थर उद्योग नई ऊंचाइयां छूने के लिए पूरी तरह तैयार है तथा हम इस उद्योग को मजबूत बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने सभी उद्यमियों से प्रदेश में मिलकर पत्थर उद्योग को देश में सिरमौर बनाने की अपील की। शर्मा गुरुवार को जयपुर के जेईसीसी में आयोजित इंडिया स्टोन मार्ट के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने सीडॉस, रीको और लघु उद्योग भारती को इस भव्य आयोजन के लिए बधाई देते हुए कहा कि इंडिया स्टोनमार्ट प्रदर्शनी नए राजस्थान के संकल्प का प्रतीक है। यह आयोजन भारतीय प्राकृतिक पत्थर उद्योग की शक्ति और सामर्थ्य को प्रदर्शित करने का एक वैश्विक मंच बन चुका है। उन्होंने कहा कि इस स्टोन मार्ट का पहली बार 26 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में वेबसाइट निर्माण, डिजिटल मोबाइल एप्लीकेशन तथा विशाल क्षेत्र में प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है। शर्मा ने कहा कि हमारी सरकार ने पत्थर उद्योग सहित सभी प्रकार के उद्योगों के लिए निवेश-अनुकूल और नीति-स्थिर वातावरण तैयार करने का काम किया है। सिंगल विंडो सिस्टम, औद्योगिक बुनियादी ढांचे का सुदृढ़ीकरण, लॉजिस्टिक्स में सुधार, प्रक्रियाओं का सरलीकरण जैसे नवाचारों से उद्यमी बिना परेशानी के यहां आसानी से स्वयं का उद्यम स्थापित कर सकता है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने अनेक नीतियां लागू कीं है जिससे निवेश करना आसान हुआ है और आर्थिक विकास, नवाचार एवं रोजगार सृजन के भी कई नए मार्ग खुले हैं। उन्होंने कहा कि राइजिंग राजस्थान इनवेस्टमेंट समिट के तहत किए गए 35 लाख करोड़ के एमओयू में से 8 लाख करोड़ के कार्य शुरू हो चुके है।

पीएम ने उद्योगों को दी नई दिशा

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी और कुशल नेतृत्व में आज भारत वैश्विक विनिर्माण का केंद्र बनकर उभर रहा है। मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत की महत्वाकांक्षी परिकल्पना ने उद्योगों को नई दिशा और नया विश्वास दिया है। उन्होंने कहा कि भारतीय ग्रेनाइट, संगमरमर और सैंडस्टोन दुनियाभर में प्रसिद्ध है। भारत पत्थर निर्यातक के साथ मूल्य संवर्धन और नवाचार का केंद्र भी बन रहा है। साथ ही, हमारी कंपनियां वैश्विक संस्थानों के रूप में तेजी से उभर रही हैं। यह हमारे उद्योग के लिए तेज गति से बढ़ने का सुनहरा अवसर है।

श्रमिकों की सुरक्षा एवं सम्मान हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में विपुल खनिज संपदा है। यहां कुल 85 तरह के खनिज उपलब्ध है। मकराना का संगमरमर, किशनगढ़ का मार्बल सहित राजसमंद, जालौर, उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा के पत्थर दुनियाभर में प्रसिद्ध है। राजस्थान के पास न केवल समृद्ध संसाधन हैं, बल्कि सदियों पुरानी शिल्पकला की परंपरा भी है। साथ ही, हमारे कारीगरों की कला विश्वविख्यात है। हमारे पत्थर को पर्यावरण के अनुकूल, टिकाऊ और गुणवत्तापूर्ण निर्माण सामग्री के रूप में अंतर्राष्ट्रीय स्वीकृति मिल रही है। उन्होंने कहा कि उद्योग की असली ताकत हमारे कुशल कारीगर और मेहनतकश श्रमिक हैं। उनके हाथों की कारीगरी ही साधारण पत्थर को अद्भुत कला में बदलती है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार के लिए श्रमिकों की सुरक्षा एवं सम्मान सर्वोच्च प्राथमिकता है। साथ ही, श्रमिकों के लिए आधुनिक सुरक्षा उपकरण, कौशल प्रशिक्षण, बेहतर काम का माहौल और उचित मजदूरी सुनिश्चित की जा रही है।

कांग्रेस राज में उद्योगों के लिए कोई स्पष्ट नीति नहीं थी

शर्मा ने कहा कि पूर्ववर्ती सरकार के समय उद्योगों के लिए कोई स्पष्ट नीति नहीं थी जिससे उद्योगपति दूसरे राज्यों की तरफ पलायन करने लगे थे तथा युवाओं के लिए रोजगार के अवसर भी कम हो गए थे। लेकिन हमारी सरकार द्वारा प्रत्येक कार्य निष्पक्षता और पारदर्शिता से किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि हमारा संकल्प है कि प्रदेश की अर्थव्यवस्था को वर्ष 2030 तक 350 बिलियन डॉलर इकॉनोमी बनाया जाए।

राज्य सरकार पत्थर उद्योग को आगे बढ़ाने के लिए तत्पर: कर्नल राठौड़

इस अवसर पर उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के कुशल नेतृत्व में राज्य सरकार पत्थर उद्योग को आगे बढ़ाने के लिए तत्पर है। राज्य सरकार द्वारा निवेश परक नई नीतियों, सिंगल विंडो क्लियरेंस, प्रक्रियाओं का सरलीकरण सहित विभिन्न नवाचारों के माध्यम से उद्यमियों को राहत दी जा रही है। उन्होंने कहा कि यह इंडिया स्टोनमार्ट प्रदेश के पत्थर से जुड़े उद्यमियों को वैश्विक पटल पर आगे ले जाने के लिए सहायक सिद्ध होगा। इस दौरान मुख्यमंत्री ने स्टोन क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले श्रीराम मेगा स्ट्रक्चर के निदेशक अनिल चौधरी तथा एवर शाइन मार्बल्स के प्रबंध निदेशक मुकेश चंद्र अग्रवाल को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया। इससे पहले मुख्यमंत्री ने इंडिया स्टोनमार्ट 2026 प्रदर्शनी का फीता खोलकर उद्घाटन किया एवं स्टॉल्स का अवलोकन किया।

महल योजना जगतपुरा में धूमधाम से मनाया गया भगवान पद्मप्रभ का मोक्ष कल्याणक

जयपुर. शाबाश इंडिया। जगतपुरा की महल योजना स्थित दिगंबर जैन मंदिर में जैन धर्म के छठे तीर्थंकर भगवान पद्मप्रभ का मोक्ष कल्याणक महोत्सव भक्तिभाव के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः काल भगवान के अभिषेक और शांतिधारा के साथ हुआ। इसके पश्चात उपस्थित श्रद्धालुओं ने सामूहिक रूप से 'निर्वाण कांड' का पाठ किया और भगवान के चरणों में निर्वाण लाडू अर्पित किया। समन्वयक अभिषेक सांघी ने भगवान पद्मप्रभ के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उनका जीवन त्याग, वैराग्य और शांति का अनुपम प्रतीक है। उन्होंने संसार की अनित्यता को जानकर दीक्षा ग्रहण की और कठिन तपस्या के बल पर 'केवल ज्ञान' प्राप्त किया। अंततः सम्मेद शिखर जी की मोहन कूट से उन्हें निर्वाण की प्राप्ति हुई। इस मांगलिक अवसर पर मुकेश-निर्मला सांघी, अनूप-सुलोचना, शिव-पिंकल, भागचंद, कनक, नमन, मैना, रूपेश, धीरेंद्र, नेम-इंदु और मंजू सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

कर्ज.लेकर 'घी' पीना और दिखावा: पतन का पहला मार्ग

कर्ज.स्वयं में बुरा नहीं है, लेकिन यह तब अभिशाप बन जाता है जब जरूरत के लिए नहीं, बल्कि झूठी शान और दिखावे के लिए लिया जाए। आज समाज में एक आत्मघाती प्रतिस्पर्धा चल पड़ी है किसका पहनावा अधिक कीमती है, किसके घर के बाहर बड़ी गाड़ी खड़ी है, या किसकी शादी और समारोह कितने भव्य हैं? इस अंधी दौड़ में लोग अपनी वास्तविक आर्थिक स्थिति को भूल जाते हैं और मात्र दूसरों को प्रभावित करने के लिए ऐसे निर्णय ले लेते हैं, जिनका आर्थिक बोझ

उन्हें वर्षों तक ढोना पड़ता है। कर्ज लेकर घी पीना केवल एक पुरानी कहावत नहीं, बल्कि एक ऐसी मानसिकता है जो जीवन को भीतर से खोखला कर देती है। जब आय सीमित हो और व्यय बेलगाम हो जाए, तब समस्या केवल आर्थिक नहीं रह जाती; बल्कि मनुष्य अपना आत्मसम्मान और मानसिक शांति भी गिरवी रख देता है। दिखावा कुछ समय के लिए समाज से प्रशंसा और तालियाँ तो दिलवा सकता है, लेकिन उसके बाद शुरू होने वाला एटक का चक्र, उधारी और मानसिक तनाव जीवन को दूभर कर देते हैं। आज कई परिवार केवल इसलिए तनावग्रस्त हैं क्योंकि उन्होंने समाज के सामने 'झूठी प्रतिष्ठा' बनाए रखने के लिए अपनी वास्तविकता को छिपा लिया। धीरे-धीरे यह कर्ज एक आदत बन जाता है और व्यक्ति अपनी मेहनत की कमाई का आनंद लेने के बजाय, दूसरों की नजरों में बड़ा दिखने के जाल में फँस जाता है। यही वह बिंदु है जहाँ से व्यक्ति का पतन प्रारंभ होता है—जब 'आवश्यकता' और 'शौक' के बीच की सीमा समाप्त हो जाती है। सच्ची बुद्धिमत्ता दिखावे में नहीं, बल्कि संतुलन में निहित है। जो व्यक्ति अपनी मयार्दा और सामर्थ्य के अनुसार जीवन जीता है, वही वास्तव में सुखी और सुरक्षित रहता है। कर्ज के सहारे खड़ा किया गया वैभव बाहर से चमकीला दिख सकता है, किंतु उसके भीतर भय, चिंता और असुरक्षा का अंधकार होता है। अतः समय रहते यह समझना अनिवार्य है कि सादगी कमजोरी नहीं, बल्कि एक स्थायी शक्ति है। दिखावे का त्याग कर वास्तविकता को स्वीकार करना ही जीवन को स्थिर, सुरक्षित और सम्मानजनक बनाता है।

नितिन जैन संयोजक: जैन तीर्थ श्री पार्श्व पद्मावती धाम, पलवल (हरियाणा)
जिलाध्यक्ष: अखिल भारतीय अग्रवाल संगठन, पलवल संपर्क: 9215635871

निर्वाण लाडू अर्पित कर मनाया गया भगवान पद्मप्रभु स्वामी का मोक्षकल्याणक

सनावद. शाबाश इंडिया। जैन धर्म के छठवें तीर्थंकर भगवान पद्मप्रभु स्वामी का मोक्षकल्याणक महोत्सव गुरुवार को श्रद्धापूर्वक मनाया गया। स्थानीय श्री सुपार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में प्रातः 6 बजे भगवान के जलाभिषेक और शांतिधारा के साथ धार्मिक अनुष्ठानों का शुभारंभ हुआ। नित्य पूजा के उपरांत भगवान की विशेष पूजन की गई और सामूहिक रूप से 'निर्वाणकांड' का पाठ किया गया। अंत में भगवान के मोक्षगमन के प्रतीक स्वरूप निर्वाण लाडू अर्पित किया गया। पार्श्व ज्योति मंच के अध्यक्ष डॉ. नरेन्द्र जैन 'भारती' ने भगवान के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि प्रभु का जन्म कौशाम्बी नगरी के राजा धरण और रानी सुसीमा के राजमहल में हुआ था। आपके राज्यकाल में प्रजा पूर्णतः सुखी और सम्पन्न थी। अपार वैभव के बीच रहते हुए भी आपका मन सांसारिक विषयों में नहीं रमा। उन्होंने बताया कि महल के द्वार पर हाथी की बंधावस्था को देखकर भगवान को पूर्व जन्म का स्मरण हुआ, जिसके बाद उन्होंने कर्मों के बंधन से मुक्त होने के लिए तप पथ का चयन किया। छह माह की कठोर साधना के पश्चात केवलज्ञान प्राप्त कर उन्होंने प्राणियों को धर्मोपदेश दिया। अंततः पावन सिद्धक्षेत्र सम्मेद शिखर जी से आज ही के दिन उन्होंने मोक्ष (निर्वाण) प्राप्त किया था। इस अवसर पर कमलेश भूच, नरेन्द्र जैन, संतोष बाकलीवाल, नरेश पाटनी, जंगलेश जैन, नवीन भूच, हेमचंद पाटोदी, मंजुला भूच, हीरामणि भूच, मंजू पाटनी, जयश्री जैन, चंदा पाटनी, मधु भूच, अंजू पाटनी सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे।

॥ श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः॥

पद्मपुरा

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

दिनांक 18 से 22 फरवरी 2026

श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा नवनिर्मित खड्गासन चौबीसी

एवं

पद्मबल्लभ शिखर कलश - ध्वजारोहण महामहोत्सव

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
पद्मपुरा (बाड़ा) जयपुर, राजस्थान

: पावन सान्निध्य :
वात्सल्य वारिधि
पंचम पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमानसागर जी महाराज
ससंघ

: पावन सान्निध्य :
वात्सल्य वारिधि पंचम पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमानसागर जी महाराज ससंघ

: पावन प्रेरणा :
गणिनी आर्यिका 105 श्री स्वस्तिभूषण माताजी ससंघ

प्रतिष्ठाचार्य : पं. हँसमुख जी जैन (धरियावद) राज.

: पावन प्रेरणा :
गणिनी आर्यिका
105 श्री स्वस्ति भूषण माताजी
ससंघ

पधारो पद्मपुरा बाड़ा

जहां धर्म की ज्योति प्रज्ज्वलित होती है

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में इन्द्र एवं अन्य पात्र बनने के लिए सम्पर्क करें।

| सुधीर कुमार जैन 'एडवोकेट' 94140 50432 | हेमन्त सौगानी 'एडवोकेट' 98290 64506 | राजकुमार कोठ्यारी 94140 48432 |

निवेदक

पद्मपुरा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति

अन्तर्गत : प्रबन्ध समिति, श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा (बाड़ा), जयपुर, राजस्थान

सकल दिगम्बर जैन समाज पद्मपुरा एवं जयपुर (राजस्थान)

महोत्सव कार्यालय : एच-24, चितरंजन मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर 302 001 | मोबाईल नम्बर : 94140 48432, 98290 64506
क्षेत्रीय कार्यालय : बाड़ा पदमपुरा जयपुर 303 903 | मोबाईल नम्बर : 90579 03365

वेद ज्ञान

जाति, न्याय और लोकतंत्र

भारतीय लोकतंत्र केवल एक शासन प्रणाली नहीं, बल्कि समानता, न्याय और बंधुत्व का एक महान नैतिक संकल्प है। संविधान की प्रस्तावना इसी संकल्प का उद्घोष करती है। परंतु आज जब हम अपने चारों ओर देखते हैं, तो एक असहज प्रश्न खड़ा होता है क्या हम उस संकल्प के साथ न्याय कर पा रहे हैं? या फिर लोकतंत्र का यह ढांचा भीतर से दरक चुका है, जहां कानून, व्यवस्था और सत्ता तीनों ही जाति, वर्ग और संकीर्ण पहचान की गिरफ़्त में हैं। आज कानून बनते हैं, संशोधन होते हैं, परंतु उनके पीछे की मंशा पर सवाल उठना स्वाभाविक है। क्या ये विधान नागरिक के अधिकार के लिए हैं, या किसी विशेष 'वोट बैंक' को साधने के लिए? जब विधि का आधार तर्क और न्याय की जगह सामाजिक पहचान लेने लगे, तब लोकतंत्र का संतुलन बिगड़ना तय है। कानून का प्राथमिक धर्म समाज को जोड़ना है, लेकिन यदि वही समाज को खांचों में बांटने का माध्यम बन जाए, तो यह स्थिति केवल चिंताजनक नहीं, बल्कि आत्मघाती है। न्याय व्यवस्था किसी भी लोकतंत्र का सबसे पवित्र स्तंभ मानी जाती है। न्यायालय वह स्थान है जहां एक आम नागरिक की अंतिम उम्मीद टिकी होती है। लेकिन जब यह धारणा बनने लगे कि न्याय की दहलीज पर पहुंचने से पहले व्यक्ति की जाति, हैसियत और राजनीतिक रसूख को तौला जा रहा है, तो विश्वास की नींव हिलने लगती है। न्याय केवल एक कानूनी निर्णय नहीं, बल्कि समाज का व्यवस्था पर 'भरोसा' है। आज न्यायालयों में लंबित मामलों का अंबार और चयनात्मक न्याय की चुनौतियां लोकतंत्र के स्वास्थ्य पर गंभीर प्रश्नचिह्न लगाती हैं। लोकतंत्र के नाम पर सत्य का क्षरण एक धीमी लेकिन निरंतर प्रक्रिया है। पहले असुविधाजनक सवालों को ''राष्ट्र-विरोधी'' कहा जाता है, फिर आलोचना को 'षड्यंत्र' बताया जाता है, और अंततः सच बोलने वालों को हाशिए पर धकेल दिया जाता है। जब संसद में बहसें समाधान के बजाय शोर बन जाएं, मीडिया का एक बड़ा हिस्सा सत्ता का विस्तार बन जाए, और सामाजिक विमर्श केवल भावनाओं के उकसावे तक सिमट जाए, तो समझ लेना चाहिए कि लोकतंत्र की आत्मा संकट में है।

संपादकीय

भारत-अमेरिका व्यापार समझौते के निहितार्थ

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति और वैश्विक व्यापार के परिदृश्य में कोई भी समझौता केवल आंकड़ों या कर-प्रतिशतों तक सीमित नहीं होता; वह राष्ट्र की संप्रभुता, नेतृत्व की दृढ़ता और भविष्य की दिशा का संकेतक होता है। भारत और अमेरिका के बीच हालिया व्यापारिक सहमति, जिसके अंतर्गत प्रस्तावित 50 प्रतिशत टैरिफ को घटाकर 18 प्रतिशत किया गया है, इसी दृष्टि से एक दूरगामी घटना है। यह निर्णय केवल आर्थिक राहत नहीं, बल्कि

बदलते वैश्विक शक्ति-संतुलन और भारत की बढ़ती 'बार्गेनिंग पावर' का प्रमाण है। यहां ''देर आए, दुरुस्त आए'' की कहावत पूरी तरह चरितार्थ होती है। जब अमेरिका द्वारा भारतीय उत्पादों पर ऊंचे टैरिफ का दबाव बनाया गया, तब आशंका व्यक्त की जा रही थी कि भारत को झुकना पड़ेगा। किंतु फरवरी 2025 में आरंभ हुई इस प्रक्रिया का फरवरी 2026 में सकारात्मक परिणति तक पहुंचना यह दर्शाता है कि भारत ने न तो जल्दबाजी दिखाई और न ही राष्ट्रीय हितों से समझौता किया। भारत ने समय लिया, परिस्थितियों का मूल्यांकन किया और अंततः एक संतुलित व सम्मानजनक परिणाम प्राप्त किया। 50 प्रतिशत से 18 प्रतिशत तक की इस भारी कटौती का तात्कालिक प्रभाव शेयर बाजार और निवेशक भरोसे में दिखाई दिया। किंतु इसका वास्तविक महत्व गहरा है। यह पुष्टि करता है कि भारत अब केवल नियमों का पालन करने वाला देश नहीं, बल्कि नियमों के निर्माण और उनकी पुनर्परिभाषा में सक्रिय भूमिका निभाने वाला राष्ट्र बन चुका है। अमेरिका जैसी महाशक्ति का अपने रुख में नरमी लाना भारत की आर्थिक ताकत, रणनीतिक धैर्य और राजनीतिक आत्मविश्वास का प्रत्यक्ष प्रमाण है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विदेश नीति की विशेषता यही रही है कि इसमें संवाद का स्थान है, पर दबाव के आगे समर्पण का नहीं। इस समझौते से भारतीय उद्योगों, विशेषकर टेक्सटाइल, फार्मास्यूटिकल्स, ऑटोमोबाइल और कृषि क्षेत्र को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में बढ़त मिलेगी। कम टैरिफ का अर्थ है कि भारतीय उत्पाद अमेरिकी बाजार में अधिक प्रतिस्पर्धी होंगे, जिससे 'मेक इन इंडिया' को नई ऊर्जा मिलेगी। भारत अब केवल कच्चा माल प्रदाता नहीं, बल्कि मूल्यवर्धित उत्पादन और नवाचार का केंद्र बनता जा रहा है। प्रधानमंत्री मोदी ने संसदीय दल की बैठक में इसे 'निरंतर धैर्य का परिणाम' बताया। अमेरिका का लचीला रुख किसी भावनात्मक मित्रता का नहीं, बल्कि ठोस रणनीतिक विवशता का नतीजा है। बीते एक वर्ष में भारत ने स्पष्ट कर दिया कि उसके पास विकल्पों की कमी नहीं है चाहे वह रूस के साथ ऊर्जा सहयोग हो या यूरोपीय संघ के साथ व्यापारिक वार्ताएं। यदि वाशिंगटन अडिग रहता, तो अमेरिकी कंपनियां दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते बाजार से बाहर हो जातीं। ट्रंप द्वारा किए गए 'शून्य टैरिफ' जैसे नाटकीय दावों पर मोदी का मौन यह दर्शाता है कि भारत तात्कालिक शोर के बजाय दीर्घकालिक लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। इसके विपरीत, विपक्ष की राजनीतिक अधीरता यहां उजागर हुई।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

संवाद का माध्यम या निजता का संकट?

सुनील कुमार महला

आज संचार क्रांति का दौर है। हर कोई सामाजिक माध्यमों और कृत्रिम मेधा का उपयोग कर रहा है। आधुनिक काल में सामाजिक माध्यमों ने हमारे अनेक कार्यों को सुगम और सरल बना दिया है। दूसरे शब्दों में कहें तो सामाजिक माध्यमों ने संवाद को जितना सहज और व्यापक बनाया है, उतना ही जटिल निजता का प्रश्न भी खड़ा कर दिया है। आज व्यक्ति अपने जीवन के निजी क्षण तस्वीरें और छोटी फिल्में (रील) बनाकर अपने विचार, स्थान और दिनचर्या स्वेच्छा से सार्वजनिक मंचों पर साझा कर रहा है। यह आत्म-अभिव्यक्ति का माध्यम तो है ही, परंतु कई बार अनजाने में अपनी निजता को जोखिम में डालने का कारण भी बन जाता है। 'पसंद' और 'प्रसार' की होड़ में निजी सीमाएं धुंधली होती जा रही हैं। आज के समय में तकनीक हमारी ज़िंदगी की पल-पल की महत्वपूर्ण आवश्यकता बन चुकी है। चलभाष (मोबाइल), अंतरजाल और सामाजिक माध्यमों ने काम आसान कर दिए हैं, लेकिन इसके साथ निजता का एक बड़ा खतरा भी जुड़ा है। अधिकांश लोगों के पास स्मार्टफोन है, लेकिन बहुत से लोग यह नहीं जानते कि किसी पटल पर पंजीकरण करते समय जो निजी जानकारी वे देते हैं, उसका दुरुपयोग भी हो सकता है। कई बार यह जानकारी हमारी अनुमति के बिना किसी अन्य को बेची जा सकती है। वर्ष 2025 के ताजा वैश्विक अनुमानों के अनुसार, दुनिया में लगभग 7 अरब से अधिक लोग बुद्धिमान चलभाष का उपयोग कर रहे हैं। भारत इस क्षेत्र में दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा बाजार बन चुका है। साल 2024-2025 के आंकड़ों के अनुसार, भारत में इन उपयोगकर्ताओं की संख्या लगभग 65-70 करोड़ है, जो कुल जनसंख्या का करीब 45-50 प्रतिशत है। ग्रामीण क्षेत्रों में अंतरजाल के विस्तार के कारण यह संख्या तेजी से बढ़ रही है और 2026 तक भारत में यह संख्या 100 करोड़ के आसपास पहुंच सकती है। इस क्रम में यह उल्लेखनीय है कि एक मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने मेटा और व्हाट्सऐप को कड़ी फटकार लगाई है। न्यायालय ने स्पष्ट कहा कि कोई भी कंपनी नागरिकों की निजी जानकारी के साथ मनमानी नहीं कर सकती और निजता के अधिकार से खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। डिजिटल युग में आज दूरभाष संख्या, बैंक खाता, आधार जैसी जगहों पर हमें अपनी निजी और बायोमेट्रिक जानकारी देनी पड़ती है। यदि यह जानकारी गलत हाथों में चली जाए, तो भारी क्षति हो सकती है। समस्या यह है कि यह पता लगाना कठिन है कि हमारी जानकारी कहां-कहां पहुंच चुकी है। ज्यादातर लोग नियम और शर्तें पढ़े बिना ही 'सहमति' दे देते हैं। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि ये शर्तें इतनी जटिल भाषा में लिखी जाती हैं कि आम आदमी उन्हें समझ ही नहीं पाता। इसे निजी जानकारी चुराने का एक 'सभ्य तरीका' कहा गया। डिजिटल पटल उपयोगकर्ता की गतिविधियों का सूक्ष्म विश्लेषण करते हैं क्या देखा, क्या पसंद किया, कहां गए और इस डेटा का उपयोग विज्ञापन और व्यावसायिक हितों के लिए किया जाता है। वास्तव में, डेटा का रिसाव और अनधिकृत निगरानी निजता के हनन को और गंभीर बनाती है। निजता का हनन केवल तकनीकी नहीं, बल्कि सामाजिक समस्या भी है। बिना अनुमति चित्र साझा करना, उपहास (ट्रोलिंग) और ऑनलाइन उत्पीड़न मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। बच्चों के लिए यह खतरा और बड़ा है। इस चुनौती का समाधान बहुस्तरीय है। एक ओर सशक्त डेटा संरक्षण कानून और पारदर्शी नीतियां आवश्यक हैं।

अंतर्मना धार्मिक एवं पारमार्थिक न्यास
तथा पतंजलि योगपीठ हरिद्वार द्वारा आयोजित

एक हर मास उपवास

एक दिन स्वयं के लिए

7 फरवरी, 2026 | दोपहर 2.30–5.00 बजे

सेन्ट्रल लॉज एन्टरटेनमेन्ट, पैराडाइज सर्किल, जयपुर (EP)

द्वितीय सामूहिक उपवास एवं कवि सम्मेलन

राजीव जैन गाजियाबाद अध्यक्ष बापू नगर	राजेश रांवका उपाध्यक्ष जयपुर	विनय सौगानी सह-सचिव जयपुर	आलोक जैन सचिव बापू नगर
प्रितेश जैन कोषाध्यक्ष जयपुर	चेतन जैन निमोड़िया सदस्य जयपुर	आशीष चौधरी सदस्य जयपुर	

अरावली की महानता: ऊंचाई से नहीं, भूगोल, संस्कृति और आध्यात्मिकता से आंकी जाए

पदम चंद गांधी

अरावली पर्वतमाला विश्व की प्राचीनतम वलित पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है। इसकी उत्पत्ति लगभग 150 करोड़ वर्ष पूर्व 'प्री-कैम्ब्रियन एरा' में टेक्टोनिक प्लेटों के टकराव (अर्कियन हलचल) से हुई थी, जो भारत की प्राचीनतम संरचना 'गोंडवाना लैंड' का हिस्सा है। इसे 'आडावाला पर्वत' के नाम से भी जाना जाता है, जो भारत के सप्त कुल पर्वतों में परिगणित है। पारिजात वृक्षों की प्रचुरता के कारण इसे 'पारिजात पर्वत' भी कहा जाता है। अरावली न केवल एक भू-वैज्ञानिक चमत्कार है, बल्कि भारतीय उपमहाद्वीप की जलवायु, संस्कृति और इतिहास का अभिन्न अंग भी है। गुजरात से लेकर राजस्थान, हरियाणा और दिल्ली तक 692 किलोमीटर की लंबाई में फैली यह श्रृंखला अब अपरदन, अपक्षय, अवैध खनन और मानवीय दोहन के कारण क्षीण होती जा रही है। इसका एक सिरा 'गुरु शिखर' (माउंट आबू) के रूप में 1727 मीटर की ऊंचाई तक है, तो दूसरा सिरा छोटी-छोटी 'रिज' पहाड़ियों (टेकरियों) के रूप में मात्र 50 फीट की ऊंचाई लिए हुए भी इसका गौरव बढ़ा रहा है। न्यायिक निर्णय और संरक्षण का संकट 20 नवंबर 2025 को सर्वोच्च न्यायालय के एक निर्णय के अनुसार, अरावली की महानता के मापदंड में केवल 100 मीटर से ऊंची चोटियों को ही 'अरावली हिल्स' मानने की बात कही गई थी। इससे कम ऊंचाई वाली पहाड़ियों को इस श्रेणी से बाहर रखने का प्रावधान था। साथ ही, 37 जिलों की ऐसी दो या अधिक पहाड़ियां जो 500 मीटर के दायरे में हों, उन्हें ही संरक्षित क्षेत्र माना जाना था। इस निर्णय का व्यापक विरोध हुआ, जिसके बाद उच्चतम न्यायालय ने इस पर रोक लगाते हुए एक 'हाई-पावर्ड एक्सपर्ट कमेटी' का गठन किया है। यह समिति निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार करेगी:

क्या 100 मीटर की शर्त से राजस्थान की 12,081 पहाड़ियों में से केवल 1,048 ही संरक्षण के दायरे में रह जाएंगी?

क्या 500 मीटर की दूरी तय करने से संरक्षण क्षेत्र सीमित होकर अवैध खनन को बढ़ावा देगा?

इस पर्वतमाला की भौगोलिक अखंडता को कैसे अक्षुण्ण रखा जाए?

अरावली की विधिक परिभाषा में किन क्षेत्रों को शामिल किया जाए?

सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवनरेखा अरावली की महानता को केवल ऊंचाई से मापना ही विवाद का मुख्य कारण है। यह श्रृंखला रेगिस्तान के विस्तार को रोकने, जैव विविधता के संरक्षण और भू-जल पुनर्भरण में अहम भूमिका निभाती है। इसका आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व जनमानस की संवेदनाओं से जुड़ा है। अरावली से निकलने वाली नदियाँ आज भी आस्था का केंद्र हैं। इनमें वेद स्मृति (बनास), वेदवती (बेड़च), वृत्तध्वी (ऊतंगन), सिंधु (कालीसिंध), वणार्शा, साबरमती, पार्वती, चर्मण्वती (चंबल), गंभीरी, लूणी और वेत्रवती (बेतवा) आदि शामिल हैं, जो धार्मिक दृष्टि से पवित्र मानी जाती हैं। खनन का दंश और भयावह वास्तविकता अरावली खनिजों का समृद्ध भंडार है। यहाँ तांबा, सीसा, जस्ता, संगमरमर और ग्रेनाइट प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। किंतु अत्यधिक दोहन से यह भूमि खोखली होती जा रही है। हरियाणा के भिवानी जिले के 'खानक' गांव का उदाहरण भयावह है। मात्र 1,500 घरों की बस्ती वाले इस क्षेत्र में 300 क्रशर और 150 खनन स्थल सक्रिय हैं। अरावली को 500 फीट की गहराई तक

खोद दिया गया है। इसके परिणामस्वरूप फसलों का उत्पादन 40% रह गया है, भू-जल जहरीला हो चुका है और लोग श्वास संबंधी रोगों से जूझ रहे हैं।

पौराणिक और ऐतिहासिक धरोहर पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, भगवान कृष्ण द्वारा उठाया गया 'गोवर्धन पर्वत' अरावली का ही अंश है। महाभारत काल में यह असुर राज वृषपर्व के साम्राज्य का भाग था, जहाँ असुरों के गुरु शुक्राचार्य का निवास था। यहाँ की पहाड़ियों में ऋषि-मुनियों की तपोभूमि रही है—माउंट आबू में गुरु वशिष्ठ, नाग पर्वत पर अगस्त्य ऋषि, और कुंभलगढ़ में परशुराम जी की तपस्या के प्रमाण मिलते हैं। अलवर का विराट और पांडुपोल क्षेत्र पांडवों के अज्ञातवास का साक्षी रहा है। जैन धर्मावलंबियों के लिए रणकपुर की स्थापत्य कला और अरावली की गोद में स्थित मां शाकंभरी के शक्तिपीठ विश्व धरोहर के समान पूजनीय हैं। ऐतिहासिक रूप से कुंभलगढ़, चित्तौड़गढ़ और आमेर जैसे अभेद्य किले इसी पर्वतमाला की सामरिक सुदृढ़ता का प्रमाण हैं। निष्कर्ष यदि अरावली को केवल ऊंचाई के आधार पर परिभाषित किया गया, तो इसके गंभीर परिणाम होंगे। यह पर्वतमाला एक प्राकृतिक 'डस्ट बैरियर' है जो थार मरुस्थल को उत्तर भारत के मैदानों की ओर बढ़ने से रोकती है। इसके नष्ट होने से दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण का स्तर (ढट 10 और ढट 2.5) जानलेवा हो जाएगा। प्रति हेक्टेयर 20 लाख लीटर भू-जल पुनर्भरण की इसकी क्षमता समाप्त होने से राजस्थान और हरियाणा में अकाल की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। अतः अरावली की महानता इसकी ऊंचाई में नहीं, बल्कि इसके भौगोलिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामरिक स्वरूप में निहित है। इसका संरक्षण मात्र पर्यावरण की रक्षा नहीं, बल्कि सभ्यता की रक्षा है।

(लेखक: वरिष्ठ साहित्यकार, आध्यात्मिक चिंतक एवं सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी)

भक्ति और उत्साह के साथ मनाया गया भगवान पद्मप्रभु का मोक्ष कल्याणक महोत्सव

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। बापू नगर स्थित श्री पद्मप्रभु दिगंबर जैन मंदिर में जैन धर्म के छठे तीर्थंकर भगवान पद्मप्रभु का मोक्ष कल्याणक महोत्सव अत्यंत उत्साह और भक्ति भाव के साथ मनाया गया। प्रचार मंत्री प्रकाश पाटनी ने बताया कि महोत्सव

का शुभारंभ प्रातः काल धार्मिक अनुष्ठानों के साथ हुआ। कल्पना सोगानी द्वारा 108 ऋद्धि मंत्रों के सस्वर पाठ के बीच श्रावकों ने मूलनायक भगवान पद्मप्रभु के साथ ही भगवान शांतिनाथ और पार्श्वनाथ का भक्तिपूर्वक मस्तकाभिषेक किया। इस अवसर पर राकेश बघेरवाल व विजय सोनी ने भगवान पद्मप्रभु पर तथा विनय कुमार जैन, लक्ष्मीकांत जैन, अशोक पाटोदी व मूलचंद सोनी ने भगवान शांतिनाथ एवं पार्श्वनाथ पर शांतिधारा करने का सौभाग्य प्राप्त किया। इसके उपरांत सामूहिक रूप से 'निर्वाण कांड' का पाठ किया गया और भगवान के मोक्षगमन के प्रतीक स्वरूप 'निर्वाण लाडू' श्रद्धापूर्वक अर्पित किया गया। पूनम चंद सेठी ने जानकारी दी कि पूजा-अर्चना के दौरान श्रावक-श्राविकाओं ने अष्टद्रव्यों से अर्घ्य समर्पित किए। भक्ति भजनों और बधाई गीतों पर महिलाओं ने नृत्य कर अपनी खुशी का इजहार किया। इस मांगलिक अवसर पर बड़ी संख्या में धमार्लुगण उपस्थित रहे, जिससे पूरा मंदिर परिसर जयकारों से गुंजायमान हो उठा।

यह दुनिया जिसे कहती है प्यार

यह दुनिया जिसे कहती है प्यार।
वह प्यार नहीं है ओ मेरे यार।।
वह भूख है दो जिस्मों की।
वह जवानी की प्यास है मेरे यार।।
यह दुनिया जिसे ----------।।

कौन चाहता नहीं, रहना महलों में।
कौन चाहता नहीं, बसना फूलों में।।
इन सबके लिए, सबको क्या चाहिए।
यह दौलत को पाने का साधन है यार।।
यह दुनिया जिसे ----------।।

वरना प्यार का, रूप से क्या लेना।
खूबसूरत चेहरे पे, दिल क्यों देना।।
क्यों होता नहीं प्यार, बदसूरत से।
यह पल पल बदलता है चेहरा यार।।
यह दुनिया जिसे ----------।।

इसमें लोग क्यों, यह भूल जाते हैं।
क्यों माँ-बाप को, बिसर जाते हैं।।
क्यों अपनी जमीं-मुल्क भूल जाते हैं।
क्या अंधा नहीं है, यह प्यार यार।।
यह दुनिया जिसे ----------।।

शिक्षक एवं साहित्यकार
गुरुदीन वर्मा उर्फ जी.आजाद
तहसील एवं जिला-बारां(राजस्थान)

मानसरोवर के वरुण पथ मंदिर में श्रद्धापूर्वक मनाया गया भगवान पद्म प्रभु का मोक्ष कल्याणक

जयपुर. शाबाश इंडिया

मानसरोवर स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर, वरुण पथ में फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी के पावन अवसर पर जैन धर्म के छठवें तीर्थंकर भगवान पद्म प्रभु का मोक्ष कल्याणक महोत्सव भक्तिभाव के साथ मनाया गया। इस उपलक्ष्य में मंदिर जी में विशेष धार्मिक अनुष्ठान आयोजित किए गए, जहाँ मंत्रोच्चारण के बीच सामूहिक रूप से 'निर्वाण लाडू' अर्पित किया गया। संगठन मंत्री सुनील जैन गंगवाल ने जानकारी दी कि कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः काल भगवान के अभिषेक और शांतिधारा के साथ हुआ। इसके पश्चात श्रद्धालुओं ने सामूहिक पूजा-अर्चना कर भगवान के गुणों का स्तवन किया। इस मांगलिक अवसर पर अध्यक्ष जे.के. जैन और कोषाध्यक्ष हेमेन्द्र सेठी ने भी विशेष पूजन में सहभागिता की। समारोह में अतिथि चंदा देवी, महेंद्र कासलीवाल, सुरेन्द्र, नव्या जैन, अक्षय-आशा गोधा, बसन्ती देवी और अजय मोजमाबाद सहित समाज के गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे। इनमें संतोष कासलीवाल, अशोक जैन, गौरव जैन, प्रमोद गंगवाल, महावीर बडजात्या, सुधीर बोहरा और बड़ी संख्या में स्थानीय श्रद्धालु शामिल हुए, जिससे पूरा वातावरण धर्ममय हो गया।

लाडनूं में आचार्यश्री महाश्रमणजी का ऐतिहासिक मंगल प्रवेशः भक्ति और उत्साह से सराबोर हुआ नगर

लाडनूं. शाबाश इंडिया

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें अधिशास्ता, शांति के दूत परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का लाडनूं नगर में भव्य एवं ऐतिहासिक मंगल प्रवेश हुआ। नगर के विभिन्न मार्गों से गुजरती आचार्यश्री की विशाल धवल सेना और रैली का नागरिकों ने स्थान-स्थान पर भावभीना वंदन और अभिनंदन किया। आचार्यश्री के स्वागत की कड़ी में दिगंबर जैन समाज की वरिष्ठ सदस्या रतनी देवी बड़जात्या के राहुगेट स्थित गृह द्वार पर उनके परिजनों एवं समाज के सदस्यों द्वारा भावपूर्ण स्वागत-वंदन किया गया। इसके पश्चात, पूज्य आचार्यश्री का प्रवास दिगंबर जैन समाज क्षेत्र में स्थित भागचंद जी बरड़िया के निवास 'भाग्यश्री' में हुआ। यहाँ श्रीचंद जी सेठी के गृह परिसर में स्थित 'महावीर समवशरण' में विशिष्टजनों एवं बड़ी संख्या में उपस्थित श्रद्धालुओं की गरिमामयी उपस्थिति में आचार्यश्री का विशेष प्रवचन कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसी क्रम में, साध्वी प्रमुखा विश्रुत विभा जी अपनी संघस्थ साध्वियों के साथ पोमराज अजित कुमार जी सेठी के निवास पर प्रवासित हुईं। विदित हो कि आचार्यश्री महाश्रमणजी अपने विशाल संघ के साथ 'योगक्षेम वर्ष' उत्सव हेतु इस वर्ष जैन विश्व भारती, लाडनूं में प्रवास करेंगे। इस दौरान वर्षभर अनेक आध्यात्मिक एवं भव्य कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com | weeklyshabaas@gmail.com

लायंस क्लब अजमेर आस्था ने 400 विद्यार्थियों को वितरित किए स्वेटर एवं नवीन वस्त्र

अजमेर. शाबाश इंडिया। लायंस क्लब्स इंटरनेशनल 3233 ई-2 के प्रांतपाल के निदेर्शानुसार प्रांतीय प्रमुख कार्यक्रम 'आओ खुशियां बांटें' के अंतर्गत 'लायंस क्लब अजमेर आस्था' द्वारा सेवा कार्य का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के तहत ग्राम सराधना के दो विद्यालयों के कुल 400 विद्यार्थियों को शीत लहर से बचाव हेतु स्वेटर एवं नवीन वस्त्र भेंट किए गए। क्लब अध्यक्ष लायन मुकेश कर्णावट ने बताया कि समाजसेवी लायन राकेश पालीवाल, लायन अतुल पाटनी एवं पूर्व क्षेत्रीय अध्यक्ष लायन मधु पाटनी के विशेष सहयोग से यह सेवा कार्य संपन्न हुआ। इसके अंतर्गत महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय के 300 विद्यार्थियों और ग्राम सराधना के ही संस्कृत विद्यालय के 100 विद्यार्थियों के लिए वस्त्र प्रदान किए गए। सेवा सामग्री विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती ममता गुर्जर एवं अध्यापक सुनील कुमार को सौंपी गई, जिसे आगामी दिनों में ग्राम के प्रबुद्धजनों एवं अभिभावकों की उपस्थिति में बच्चों को वितरित किया जाएगा। कार्यक्रम संयोजक लायन अतुल पाटनी के संयोजन में आयोजित इस गरिमामयी अवसर पर पूर्व अंतर्राष्ट्रीय निदेशक लायन नरेंद्र भंडारी, प्रांतपाल लायन रामकिशोर गर्ग, उप प्रांतपाल लायन निशांत जैन, संभागीय अध्यक्ष लायन हरीश गर्ग एवं क्षेत्रीय अध्यक्ष लायन रूपेश राठी विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस अवसर पर क्लब सचिव लायन दिनेश शर्मा, कोषाध्यक्ष लायन राकेश गुप्ता सहित संभाग के अन्य क्लब्स के पदाधिकारी एवं लायन सदस्य भी मौजूद रहे। प्रधानाचार्या श्रीमती ममता गुर्जर ने क्लब के इस पुनीत कार्य हेतु आभार व्यक्त किया।

अवधपुरी जिनालय में भक्तिभाव से मनाया गया भगवान पद्मप्रभु का मोक्ष कल्याणक महोत्सव

आगरा. शाबाश इंडिया

अवधपुरी स्थित श्री 1008 पद्मप्रभु जिनालय में गुरुवार को जैन धर्म के छठवें तीर्थंकर भगवान पद्मप्रभु का मोक्ष कल्याणक महोत्सव श्रद्धा, भक्ति और अपार उल्लास के साथ मनाया गया। इस पावन अवसर पर भगवान के निर्वाण कल्याणक के उपलक्ष्य में 'निर्वाण लाडू' चढ़ाने का भव्य धार्मिक आयोजन हुआ, जिसमें समाज के सैकड़ों श्रद्धालुओं ने सहभागिता की। श्री पद्मप्रभु जिनालय परिवार के तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में पद्मप्रभु महिला मंडल (अवधपुरी) एवं वात्सल्य सेवा समिति की विशेष भूमिका रही। महोत्सव के लिए मंदिर परिसर को आकर्षक ढंग से सजाया गया था। कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान के अभिषेक एवं शांतिधारा के साथ हुआ, जिसमें श्रावकों ने धर्म लाभ लिया। इसके पश्चात, पंडित विवेक जैन के कुशल निर्देशन में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने भक्तिपूर्वक 'निर्वाण कांड' का सामूहिक पाठ किया। पूजन के अंत में भगवान पद्मप्रभु के चरणों में 6 किलो का निर्वाण लाडू अर्पित किया गया। इस दौरान पूरा जिनालय परिसर 'भगवान पद्मप्रभु की जय' के जयघोष से गुंजायमान हो उठा। इस अवसर पर इंद्रप्रकाश जैन, विवेक जैन, रवि जैन, नरेंद्र जैन, शुभम जैन, कविता जैन, करुणा जैन, गीता जैन, हेमलता जैन, रेनू जैन, रश्मि जैन, पुष्पा जैन, शालू जैन, सीमा जैन सहित अवधपुरी जिनालय परिवार के समस्त सदस्य और गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

उबला हुआ जल अमृत बन जाता है क्योंकि यह रोग मिटाता है

हमारे स्वास्थ्य को बनाए रखने में जल की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। परंतु यदि जल को एक विशेष प्रकार से तैयार किया जाए, तो यह केवल तृप्ति ही नहीं, बल्कि औषधीय गुणों से भरपूर अमृत के समान हो जाता है। इस विशेष जल को आरोग्याम्बू कहा जाता है।

आरोग्याम्बू किसको कहते है?

आरोग्याम्बू वह जल है जिसे विशेष रूप से तैयार किया जाता है। इसे बनाने के लिए 1 लीटर पानी को उबालकर 250 मिलीलीटर तक घटा दिया जाता है। अर्थात, जब पानी को धीमी आंच पर तब तक उबाला जाता है जब तक उसकी मात्रा लगभग एक चौथाई न रह जाए, तो यह जल अत्यंत गुणकारी बन जाता है।

आरोग्याम्बू पीने के स्वास्थ्य लाभ क्या क्या है?

इस जल में अत्यधिक आयु वृद्धि कारक चिकित्सीय गुण होते हैं और यह कई बीमारियों को दूर करने में सहायक होता है। आइए जानते हैं इसके कुछ मुख्य लाभः

1. श्वसन तंत्र को स्वस्थ बनाता है।
खांसी, दमा (अस्थमा), तथा फेफड़ों में जमे कफ को दूर करने में मदद करता है।
गले की खराश और बंद नाक को खोलने में सहायक है।
2. पाचन तंत्र को मजबूत बनाता है।
भूख न लगने की समस्या को दूर करता है।
भोजन के तुरंत पचने में सहायक होता है, जिससे अपच और कब्ज जैसी समस्याएं नहीं होतीं।
गैस और एसिडिटी को कम करता है।
3. शरीर को रोगों से बचाता है
बुखार को जल्दी उतारने में मदद करता है।
शरीर में खून की कमी को दूर करता है और हीमोग्लोबिन बढ़ाता है।
हाथ-पैर की सूजन को कम करने में सहायक होता है।
बवासीर जैसी तकलीफों में लाभदायक है।
4. प्रतिरोधक क्षमता (इम्युनिटी) बढ़ाता है।
यदि इस जल का नियमित रूप से सेवन किया जाए तो व्यक्ति को प्रायः किसी भी रोग का भय नहीं रहता।
शरीर को विषैले पदार्थों (टॉक्सिन्स) से मुक्त करता है और उसे शुद्ध एवं स्वस्थ बनाए रखता है।

आरोग्याम्बू कैसे सेवन करें?

1. जब भी प्यास लगे, सामान्य पानी की जगह आरोग्याम्बू पिएं।
2. बच्चों को उनकी उम्र और आवश्यकतानुसार उचित मात्रा में यह जल दें।
3. इसे सुबह खाली पेट या दिनभर में छोटे-छोटे घूंट लेकर पीना लाभकारी होता है।

परिणाम

आरोग्याम्बू एक प्राकृतिक और आसान उपाय है, जो स्वास्थ्य को संपूर्ण रूप से सुधारने में मदद करता है। यदि इसे नियमित रूप से पीया जाए, तो यह शरीर को कई रोगों से बचाकर मजबूत और ऊर्जावान बनाए रखता है। प्राचीन आयुर्वेद में भी इस प्रकार के उबले जल का महत्व बताया गया है, और शायद इसी कारण इस जल को ₹आरोग्याम्बू₹ नाम दिया गया है, जिसका अर्थ ही ₹आरोग्य (स्वास्थ्य) देने वाला जलः₹ है।

क्या आपने कभी इस चमत्कारी जल का उपयोग किया है, कृपया मुझे कमेंट में जरूर बताएं।

- डॉ. पीयूष त्रिवेदी
आयुर्वेद विशेषज्ञ एक्यूप्रेशर सेवा समिति जयपुर।

णमोकार तीर्थ में भक्ति का शंखनाद: 351 जिनबिंबों की भव्य रथयात्रा के साथ पंचकल्याणक महोत्सव का ऐतिहासिक शुभारंभ

चांदवड/औरंगाबाद. शाबाश इंडिया

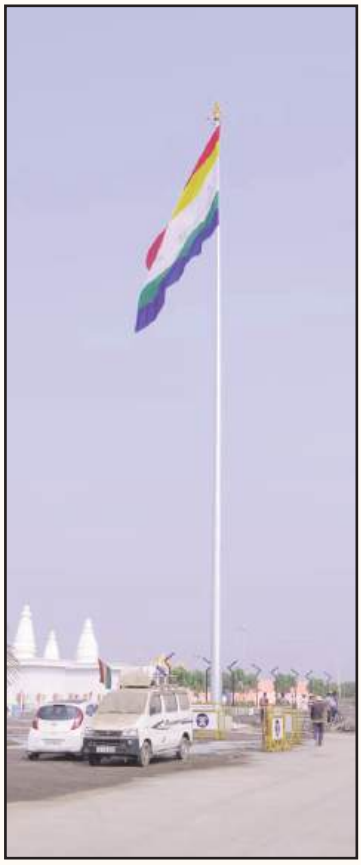

नासिक जिले के चांदवड स्थित नवनिर्मित श्री णमोकार तीर्थ के पावन प्रांगण में आज शुक्रवार, 6 फरवरी 2026 से ऐतिहासिक 'अंतरराष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव' का अत्यंत उत्साह और हर्षोल्लास के साथ प्रारंभ हुआ। गणधराचार्य 108 श्री कुंथुसागरजी महाराज और आचार्य 108 श्री देवनंदीजी महाराज के मंगल सानिध्य में आयोजित इस महोत्सव के प्रथम दिन ध्वजारोहण, घटयात्रा और यागमंडल विधान जैसे महत्वपूर्ण धार्मिक अनुष्ठान संपन्न हुए। प्रातः काल गुरु आज्ञा और मंगल कलश स्थापना महोत्सव की शुरूआत तड़के 6:30 बजे गुरु निवास स्थान पर आचार्य निमंत्रण और गुरु आज्ञा प्राप्त करने के साथ हुई। इसके पश्चात सुबह 7:00 बजे यज्ञशाला में विधि-विधान से कलश स्थापना, मृत्तिका संग्रहण और अंकुरारोपण का कार्य संपन्न किया गया। इसी पावन बेला में अखंड दीप प्रज्वलित कर विश्वशांति यज्ञ का शुभारंभ हुआ। भव्य शोभायात्रा और 351 जिनबिंबों का भ्रमण सुबह 8:00 बजे महोत्सव का मुख्य आकर्षण 351 जिनबिंबों की भव्य रथयात्रा निकाली गई। इस शोभायात्रा में बड़ी संख्या में महिलाएँ और कुमारिकाएँ अपने मस्तक पर मंगल कलश धारण कर सम्मिलित हुईं। सुबह 8:30 बजे मंडप उद्घाटन और वेदी शुद्धि के उपरांत भगवान जिनेंद्र को विराजमान कर अभिषेक एवं शांतिधारा की गई। ध्वजारोहण और धर्मसभा महोत्सव का सबसे महत्वपूर्ण अनुष्ठान 'ध्वजारोहण' सुबह 11:15 से 11:25 के शुभ मुहूर्त (तुला नवांश लग्न) में संपन्न हुआ। यह सौभाग्य मुख्य सौधर्म इंद्र नीलम अजमेरा एवं इंद्राणी कीर्तिजी अजमेरा को प्राप्त हुआ। इससे पूर्व सुबह 9:30 बजे गणधराचार्य गुरुदेव का पूजन हुआ और उनके अमृत वचनों से श्रद्धालुओं को प्रवचन का लाभ मिला। दोपहर 1:00 बजे से महामंडलाराधना और महायागमंडल विधान की प्रक्रियाएं शुरू हुईं। महोत्सव की अभूतपूर्व विशेषताएँ प्रचार-प्रसार संयोजक विनोद पाटनी और पारस लोहाडे ने बताया कि इस महोत्सव की तैयारी पिछले एक वर्ष से चल रही थीः

ऐतिहासिक मंडपः महोत्सव के लिए 1 लाख 25 हजार स्क्वायर फीट का विशाल और भव्य मंडप तैयार किया गया है।

351 वेदियों की स्थापनाः पंचकल्याणक के इतिहास में पहली बार एक ही मंडप में 351 वेदियों का निर्माण किया गया है, जहाँ इंद्र-इंद्राणी, माता-पिता और कुबेर एक साथ पूजन करेंगे।

अंतरराष्ट्रीय उपस्थितिः देश ही नहीं, बल्कि विदेशों से भी जैन श्रद्धालु भारी संख्या में यहाँ पहुँच रहे हैं, जिससे पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया है।

प्रशासनिक सुरक्षा और चाक-चौबंद व्यवस्था विभागीय आयुक्त प्रवीण गेडाम और जिलाधिकारी आयुष प्रसाद के मार्गदर्शन में प्रशासन ने कड़े सुरक्षा इंतजाम किए हैंः

सुरक्षाः 600 पुलिसकर्मी, 250 सीसीटीवी कैमरे और 100 बाउंसर तैनात किए गए हैं।

यातायातः वडालीभोई से सोग्रस फाटा तक राजमार्ग पर स्पीड ब्रेकर्स और बैरिकेड्स लगाए गए हैं।

सुविधाएंः 35 पानी के टैंकर, 20 स्वच्छता वाहन और मोबाइल स्वास्थ्य केंद्र चौबीसों घंटे कार्यरत हैं।

परिवहनः मनमाड से हर दो घंटे में विशेष बसें चलाई जा रही हैं।

रात्रि कार्यक्रमः देवलोक का जीवंत दर्शन शाम 7:00 बजे महाआरती और शास्त्र प्रवचन के बाद मुख्य मंडप में 'सौधर्म इंद्र की सभा' का जीवंत मंचन किया जाएगा। इसमें धनपति कुबेर को आज्ञा देना, रत्नजड़ित 'चंद्रपुरी' नगरी की रचना, रत्नों की वर्षा और अष्टकुमारिकाओं द्वारा जिनमाता की सेवा जैसे मनोहारी दृश्य प्रस्तुत किए जाएंगे।

— नरेंद्र अजमेरा, पीयूष कासलीवाल, औरंगाबाद

जैन संस्कृति में श्रावकों के लिए उपनयन संस्कार का अत्यधिक महत्व: मुनि श्री सारस्वत सागर जी महाराज

नांद्रे (महाराष्ट्र). शाबाश इंडिया

दिगंबराचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के शिष्य मुनि श्री सारस्वत सागर जी महाराज ने कहा कि जैन संस्कृति में श्रावकों के लिए उपनयन संस्कार का अत्यधिक महत्व है। नांद्रे पंचकल्याणक महोत्सव के पावन अवसर पर, गुरुवार सुबह 8:00 बजे मुनि श्री सारस्वत सागर जी महाराज, युवा हृदय सम्राट मुनि श्री जयंत सागर जी महाराज, शांतमूर्ति मुनि श्री सिद्ध सागर जी महाराज एवं क्षुल्लक श्री श्रुत सागर जी महाराज के मंगल सानिध्य में 250 बच्चों का सामूहिक मौजी बंधन (उपनयन) संस्कार हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ।

संस्कारों की महिमा और अष्टमूलगुण प्रवचन के दौरान 'छोटे बाबा' मुनि श्री सारस्वत सागर जी महाराज ने बताया कि जब बालक आठ वर्ष का हो जाता है, तब उसका उपनयन संस्कार किया जाता है। उन्होंने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि आज से आप अष्टमूलगुणों का पालन करने का संकल्प लें। अष्टमूलगुणों के अंतर्गत मद्य (शराब), मांस, मधु (शहद) और पांच प्रकार के उदम्बर फलों (बड़, पीपल, पाकर, ऊमर, कठूमर) का जीवन भर के लिए त्याग अनिवार्य है।

महाराज श्री ने जोर देकर कहा कि 'अभी तक बालक की जिम्मेदारी माता-पिता की थी, लेकिन उपनयन संस्कार के बाद अब यह स्वयं बच्चे का दायित्व है कि वह इन नियमों का पालन करे।' धार्मिक क्रियाओं का अधिकार महाराज श्री ने बच्चों को सप्त व्यसन (सात बुराइयों) के त्याग की प्रेरणा दी। उन्होंने बताया कि जैन संस्कृति में उपनयन संस्कार के बाद ही श्रावक को देव-पूजन, भगवान के अभिषेक और मुनिराजों को आहार दान देने का पूर्ण धार्मिक अधिकार प्राप्त होता है। उत्साहपूर्ण वातावरण और व्यवस्था नांद्रे की पावन धरा पर गुरुवार को वातावरण भक्तिमय और उत्साहपूर्ण रहा। महोत्सव से पूर्व नांद्रे के नाभिक समाज द्वारा सभी बच्चों का निःशुल्क मुंडन संस्कार किया गया। सुबह 7:00 बजे से ही माता-पिता अपने बच्चों को संस्कार हेतु पंडाल में लाने लगे थे। लगभग 250 बच्चों और उनके परिजनों की उपस्थिति से मुख्य पंडाल जनसमूह से भर गया। यह पावन विधि समस्त मुनिराजों एवं प. पू. जिनसेन भट्टारक पट्टाचार्य महास्वामीजी (नांदणी) के पावन सानिध्य में विधि-विधान के साथ संपन्न हुई।

नमोस्तु शासन जयवंत हो!

– प्रेषक: अभिषेक अशोक पाटील, कोल्हापुर

धुलियान में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया भगवान पद्मप्रभ का मोक्ष कल्याणक

धुलियान, मुर्शिदाबाद. शाबाश इंडिया

श्री 1008 भगवान महावीर दिगंबर जैन मंदिर, धुलियान में आज गुरुवार को देवाधिदेव, तीन लोक के नाथ, छठे तीर्थंकर भगवान पद्मप्रभ का मोक्ष (निर्वाण) कल्याणक अत्यंत श्रद्धा और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

धार्मिक अनुष्ठान और निर्वाण लाडू: प्रातः काल मंदिर जी में भगवान का अभिषेक और शांतिधारा संपन्न हुई। विशेष पूजा-अर्चना के मध्य श्रद्धालुओं ने भगवान पद्मप्रभ का निर्वाण लाडू समर्पित किया। मान्यता है कि भगवान पद्मप्रभ ने श्री सम्मेद शिखर जी के मोहनकूट से निर्वाण प्राप्त किया था। इसी पावन स्मृति में समाज के वरिष्ठ जनों और युवाओं ने भक्ति भाव से पूजन संपन्न किया।

संध्या कालीन कार्यक्रम: सायंकाल के समय मंदिर प्रांगण में भक्तामर ऋद्धि मंत्रों द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया। इसके उपरांत पद्मप्रभ चालीसा का सामूहिक पाठ हुआ, जिससे संपूर्ण वातावरण धर्ममय हो गया।

इस अवसर पर स्थानीय जैन समाज के अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे।

– संजय बड़जात्या, धुलियान

जोबनेर में भक्तिभाव के साथ मनाया गया भगवान पद्मप्रभ का मोक्ष कल्याणक

जोबनेर. शाबाश इंडिया

आयुष पाटनी जोबनेर स्थित श्री चंद्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिर में छठे तीर्थंकर भगवान पद्मप्रभ का मोक्ष कल्याणक श्रद्धा एवं भक्ति भाव के साथ मनाया गया। इस पावन अवसर पर प्रातःकाल विशेष धार्मिक अनुष्ठान आयोजित किए गए, जिसमें स्थानीय जैन समाज के श्रद्धालु बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए। मोक्ष कल्याणक के पावन प्रसंग पर आदि (नयन) बड़जात्या एवं मोना ठोलिया के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में भगवान की विशेष शांतिधारा की गई। मंत्रोच्चार के बीच हुई इस शांतिधारा से मंदिर का वातावरण पूर्णतः भक्तिमय और आध्यात्मिक हो गया। इस अवसर पर शांतिधारा का सौभाग्य सुशील कुमार, भाषित कुमार एवं नयन कुमार बड़जात्या को प्राप्त हुआ। श्रद्धालुओं ने भगवान पद्मप्रभ के चरणों में अर्घ्य समर्पित कर पुण्य लाभ अर्जित किया। कार्यक्रम के अंत में सभी ने भगवान से आत्मकल्याण एवं विश्व कल्याण की मंगल कामना की। आयोजन को सफल बनाने में मंदिर समिति एवं समस्त समाजजनों का सराहनीय सहयोग रहा।

'नंदजी के अंगना में बज रही बधाई, प्रकटे कान्हा खुशियों की घड़ी आई'

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

'बधाई हो बधाई' के जयकारों के साथ हर तरफ ₹नंद के आनंद भयो, जय कन्हैया लाल की₹ की गूंज सुनाई दे रही थी। बच्चा हो या बुजुर्ग, महिला हो या पुरुष–हर श्रद्धालु तारणहार श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव की खुशी के सागर में डूबा नजर आया। यह मनोहारी दृश्य गुरुवार शाम रोडवेज बस स्टैंड के पास अग्रवाल उत्सव भवन में साकार हुआ। यहाँ स्व. श्रीमती गीतादेवी तोषनीवाल चैरिटेबल ट्रस्ट के तत्वावधान में आयोजित सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा के चौथे दिन रामद्वारा (चित्तौड़गढ़) के ओजस्वी वक्ता संत श्री दिग्विजयरामजी महाराज ने कृष्ण जन्म और नंदोत्सव प्रसंग का भावपूर्ण वाचन किया।

संत वाणी: जीवन को स्वर्ग बनाने का मंत्र कथा के दौरान संत श्री दिग्विजयरामजी ने जीवन दर्शन पर प्रकाश डालते हुए कहा–

'अगर घर को स्वर्ग बनाना है, तो दिमाग में बर्फ (ठंडक) और जुबान में शुगर (मिठास) की फैक्ट्री डाल लो। यदि जीवन में दिमाग ठंडा, जेब गरम, जुबान नरम और आंखों में रहम रहे, तो जीते-जी स्वर्ग का अनुभव हो जाएगा।'

उन्होंने हिरण्यकश्यप वध और भक्त प्रहलाद के चरित्र पर चर्चा करते हुए कहा कि भगवान सृष्टि के कण-कण में व्याप्त हैं। यदि भक्ति सच्ची हो, तो वे खंभे से भी प्रकट हो सकते हैं। उन्होंने सुखी जीवन का सूत्र देते हुए कहा कि ₹भोजन लिमिटेड और भजन अनलिमिटेड₹ होना चाहिए।

जीवंत झांकियां और संतों का सानिध्य कथा के दौरान वासुदेव-कृष्ण और नृसिंह भगवान द्वारा हिरण्यकश्यप वध की सजीव झांकियों ने श्रद्धालुओं का मन मोह लिया। इस अवसर पर भीलवाड़ा के विभिन्न अखाड़ों और पीठों के प्रमुख संतों का सानिध्य प्राप्त हुआ, जिनमें महंत गोपालदास महाराज, महंत बनवारीशरण काठियाबाबा, और रामस्नेही संप्रदाय के कई वरिष्ठ संत सम्मिलित थे। अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के पूर्व अध्यक्ष रामपाल सोनी और समाजसेवी श्रीगोपाल राठी ने भी व्यास पीठ का आशीर्वाद लिया।

भक्ति और भजनों की रसधारा 'श्रीमद् नारायण भज मन नारायण' और 'सियाराम जपा करना' जैसे भजनों पर पांडाल में उपस्थित सैकड़ों भक्त झूम उठे। कथा के अंत में तोषनीवाल परिवार और श्रद्धालुओं ने भागवत जी की आरती की। मंच संचालन पंडित अशोक व्यास ने किया। शुक्रवार को श्रीकृष्ण बाल लीला, गोवर्धन पूजा और 'छप्पन भोग' का भव्य आयोजन होगा।

अपनी क्षमताओं को पहचानें और सुप्त शक्तियों को जागृत करें: आचार्य प्रसन्न सागर महाराज

थड़ी मार्केट स्थित पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में हुआ आचार्य श्री का भव्य मंगल प्रवेश

शुक्रवार सायंकाल सिद्धार्थ नगर दिगंबर जैन मंदिर पहुँचेंगे आचार्य ससंघ

जयपुर. शाबाश इंडिया

अहिंसा संस्कार पदयात्रा के प्रणेता आचार्य श्री प्रसन्न सागर महाराज ने गुरुवार को अग्रवाल फार्म (थड़ी मार्केट) स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में धर्मसभा को संबोधित किया। आचार्य श्री ने अपने संबोधन में जीवन की चुनौतियों और आत्म-शक्ति पर प्रकाश डालते हुए कहा: 'परिस्थितियाँ हमारे लिए समस्या नहीं बनतीं, बल्कि समस्या तब उत्पन्न होती है जब हम निष्क्रिय होकर उन परिस्थितियों का हिम्मत से सामना नहीं करते। श्रम और सौभाग्य (नसीब) के मेल से ही सफलता के शिखर तक पहुँचा जा सकता है।' आचार्य श्री ने कहा कि आज जीवन एक अनसुलझी पहेली जैसा बन गया है, जहाँ चारों ओर तनाव और निराशा है। इन स्थितियों से उबरने के लिए उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण बिंदु बताए:

लक्ष्य का निर्धारण: यह स्पष्ट होना चाहिए कि हमारा लक्ष्य क्या है और हम वास्तव में क्या चाहते हैं।

दूरी को मिटाना: हम 'क्या कर रहे हैं' और 'क्या कर सकते हैं', इसके बीच की दूरी को समझना और मिटाना ही

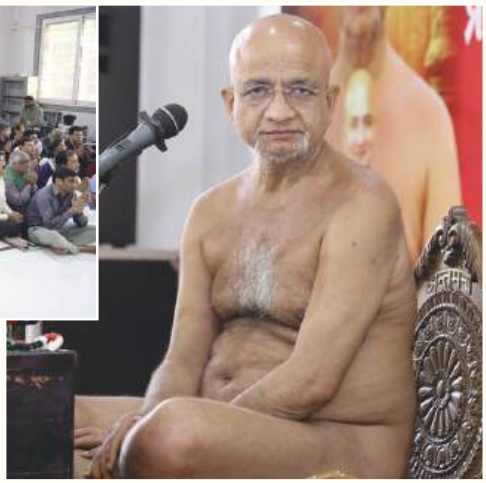

वास्तविक समाधान है।

क्षमता का जागरण: हमारे पास विवेक, बुद्धि और शक्ति मौजूद है, लेकिन हम अपनी क्षमताओं से अनभिज्ञ हैं। आवश्यकता है अपनी सुप्त (सोयी हुई) क्षमताओं को पहचानने और उन्हें जागृत करने की।

सक्रियता: हमारी निष्क्रियता ही जीवन का गणित बिगाड़ती है। आज का एक छोटा सा प्रयास सुखद भविष्य का निर्माण कर सकता है।

इससे पूर्व, गुरुवार प्रातः आचार्य श्री ससंघ (16 पिच्छीधारी) श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर (मानसरोवर) से मंगल विहार कर शिप्रा पथ और विजय पथ होते हुए थड़ी मार्केट पहुँचे। मार्ग में श्रद्धालुओं ने पुष्प वर्षा और मंगल आरती के साथ आचार्य श्री की भव्य अगवानी की।

मंदिर पहुँचने पर मंदिर समिति के अध्यक्ष सुमति प्रकाश जैन एवं महामंत्री अशोक कुमार जैन के नेतृत्व में आचार्य श्री के पाद प्रक्षालन और मंगल आरती की गई। आहार चर्या के उपरांत सामायिक, गुरु पूजा और सामूहिक प्रतिक्रमण के आयोजन हुए। सायंकाल 'आनंद यात्रा' के संगीतमय आयोजन में आचार्य श्री ने सफलता के विशेष टिप्स दिए। रात्रि विश्राम थड़ी मार्केट मंदिर जी में ही हुआ। शुक्रवार सायंकाल आचार्य श्री का मंगल विहार सिद्धार्थ नगर दिगंबर जैन मंदिर की ओर होगा।

कैमला में उमड़ा आस्था का सैलाब: नागा संत की 41 दिवसीय कठिन 'शीतल जलधारा' तपस्या का भव्य समापन

श्रीमहावीरजी. शाबाश इंडिया

निकटवर्ती गांव कैमला में इन दिनों भक्ति और साधना का अनूठा संगम देखने को मिला। श्री शंभू पंचायती अटल अखाड़ा के तत्वावधान में आयोजित 'मिनी कुंभ' ने पूरे क्षेत्र को धर्ममय बना दिया। यह भव्य आयोजन नागा संत प्रमोद गिरी जी महाराज की 41 दिवसीय कठिन हठयोग तपस्या की पूर्णाहुति के उपलक्ष्य में किया गया। हाड़ कंपा देने वाली ठंड में 101 जलधाराओं का स्नान अटल अखाड़ा से जुड़े संत प्रमोद गिरी जी महाराज पिछले 41 दिनों से अत्यंत कठिन 'शीतल जलधारा' तपस्या कर रहे थे। भीषण शीत लहर के बावजूद, महाराज प्रतिदिन 101 ठंडे जल की धाराओं के बीच साधना में लीन रहे। इस हठयोग साधना के सफल समापन पर कैमला गांव के प्राचीन तालाब में संतों और हजारों श्रद्धालुओं ने आस्था की डुबकी लगाई। नागा साधुओं का शाही स्नान और भव्य शोभायात्रा तपस्या के समापन पर हनुमान मंदिर से एक विशाल शोभायात्रा निकाली गई, जो आकर्षण का मुख्य केंद्र रही। शोभायात्रा में देश के विभिन्न हिस्सों से आए 300 से अधिक साधु-महात्माओं ने शिरकत की। 'हर-हर महादेव' के उद्घोष के बीच नागा साधुओं ने पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ शाही स्नान किया। गांव की सैकड़ों महिलाओं ने पारंपरिक वेशभूषा में मस्तक पर मंगल कलश धारण कर इस यात्रा में सहभागिता की।

कुंभमय हुआ वातावरण शोभायात्रा गांव के प्रमुख मार्गों से होती हुई 'कैमला धुनी मंदिर' पहुंची। संतों के दर्शन और महाराज की तपस्या का पुण्य लाभ लेने के लिए जनसैलाब उमड़ पड़ा। आयोजन समिति के प्रमुख गोविंद तारा और उनके सहयोगियों के प्रबंधन में विशाल भंडारे का आयोजन हुआ, जहाँ हजारों श्रद्धालुओं ने प्रसादी ग्रहण की।

महावीर इंटरनेशनल गढ़ी परतापुर ने वजवाना स्वास्थ्य केंद्र पर नवजात शिशुओं को वितरित किए 'बेबी किट'

गढ़ी परतापुर/वजवाना. शाबाश इंडिया। महावीर इंटरनेशनल गढ़ी परतापुर द्वारा राष्ट्रीय स्तर के स्थाई सेवा कार्यों के क्रम में आज प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, वजवाना में नवजात शिशुओं के लिए 15 मेडिकेटेड बेबी किट वितरित किए गए। यह कार्यक्रम वीरेंद्र कुमार यादव के निर्देशन एवं मनीषा भट्ट के संयोजन में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महावीर इंटरनेशनल के इंटरनेशनल डायरेक्टर (नॉलेज शेयरिंग एवं ई-चौपाल) अजीत कोठिया थे। संक्रमण से बचाव का संदेश कार्यक्रम के प्रारंभ में जितेंद्र सिंह चौहान ने महावीर इंटरनेशनल के सदस्यों का स्वागत किया और बेबी किट वितरण हेतु वजवाना केंद्र के चयन के लिए आभार व्यक्त किया। मनीषा भट्ट ने संस्था द्वारा किए जा रहे विभिन्न सेवा कार्यों का परिचय दिया। इस अवसर पर गवर्निंग काउंसिल सदस्य अजीत कोठिया ने नवजात शिशुओं की माताओं से आग्रह किया कि वे शिशुओं को बेबी किट में दिए गए वस्त्र ही पहनाएं ताकि वे बाहरी संक्रमण से सुरक्षित रह सकें। हृदय सुरक्षा प्रोजेक्ट के तहत किट वितरण इसी आयोजन में संस्था के 'हृदय सुरक्षा प्रोजेक्ट' के अंतर्गत सभी चिकित्सकीय स्टाफ तथा प्रशिक्षण हेतु उपस्थित सीएचओ स्टाफ को 27 जीवन रक्षक टैबलेट किट भी वितरित किए गए। उपस्थिति एवं आभार आयोजन में प्रकाश कटारा, तेजेश जोशी, कपिल त्रिवेदी, राकेश मेहता, ट्रिसा टी वर्गीज, वीणा भगोरा, लक्ष्मी बुज, हर्षिला शुक्ला, दीपक कलाल एवं प्रेमिला पाटीदार सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन अजीत कोठिया ने किया। अंत में मनीषा भट्ट, कपिल त्रिवेदी और दीपक कलाल ने सभी का आभार व्यक्त किया।

ओसवाल सभा की नई पहल : प्रति शुक्रवार शोक संतप्त परिवारों के बीच पहुँचेंगे समाजजन

उदयपुर. शाबाश इंडिया। ओसवाल सभा की प्रबंध समिति की साप्ताहिक समीक्षा बैठक मुखर्जी चौक स्थित सभा कार्यालय में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता सभा के अध्यक्ष प्रकाश चन्द्र कोठारी ने की तथा संचालन सचिव डॉ. प्रमिला जैन द्वारा किया गया। बैठक में समाज हित और भविष्य की योजनाओं को लेकर निम्नलिखित महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए:

1. शोक संवेदना एवं सूचना प्रणाली: समाज के किसी भी सदस्य के देवलोक गमन की आधिकारिक सूचना प्रसारित करने की जिम्मेदारी पूर्व मैनेजर सुभाष मेहता को सौंपी गई है। सामाजिक सरोकार के तहत अब प्रति शुक्रवार सायं 8 बजे ओसवाल सभा के पदाधिकारी शोक संतप्त परिवार के निवास पर जाकर सांत्वना देंगे। इस कार्य के संयोजन हेतु करण मल जारोली, फतेह सिंह मेहता, नितिन नरेश नागोरी, विनोद गदिया और अशोक नागोरी को नियुक्त किया गया है।

2. नवीन भवन हेतु भूमि क्रय: ओसवाल सभा के विस्तार हेतु उपयुक्त भूमि खोजने और क्रय प्रक्रिया के लिए एक विशेष कमेटी का गठन किया गया है। इसमें अभिषेक पोखरना, धीरज भाणावत, मनीष नागोरी, अनिल जारौली, गोपाल मुणेत, राजेश वया एवं कालू लाल जैन को नामित किया गया है।

3. नवीनीकरण एवं आधारभूत ढांचा: सभा कार्यालय की प्रथम मंजिल पर स्थित नौ कमरों के पूर्ण नवीनीकरण का निर्णय लिया गया है, ताकि समाजजनों के लिए सुविधाओं का विस्तार किया जा सके।

4. शपथ ग्रहण एवं अनुशासन: नवनिर्वाचित पदाधिकारियों के लिए शीघ्र ही एक भव्य शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया जाएगा। साथ ही, सभा की विशिष्ट पहचान और अनुशासन बनाए रखने के लिए कार्य परिषद के सदस्यों एवं कमेटी चेयरमैन हेतु एक निर्धारित 'ड्रेस कोड' लागू करने का निर्णय लिया गया। बैठक में उपाध्यक्ष अभिषेक पोखरना, सह सचिव कमल कोठारी, भंडार संरक्षक सुनील मेहता, दिलीप कंठालिया, अशोक नागोरी सहित कई पदाधिकारी उपस्थित रहे।

पदमपुरा में भक्ति भाव से मनाया गया भगवान पद्मप्रभ का मोक्ष कल्याणक, 21 किलो का निर्वाण लाडू अर्पित

गणिनी आर्यिका स्वस्तिभूषण माताजी के सानिध्य में हुए धार्मिक अनुष्ठान

भगवान पद्मप्रभ की खड्गासन प्रतिमा का हुआ भव्य पंचामृत महामस्तकाभिषेक

जयपुर/पदमपुरा. शाबाश इंडिया

जैन धर्म के छठे तीर्थंकर भगवान पद्मप्रभ का मोक्ष कल्याणक महोत्सव गुरुवार को राजधानी सहित आसपास के क्षेत्रों में श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस पावन अवसर पर दिगंबर जैन मंदिरों में निर्वाण लाडू चढ़ाए गए और भगवान की विशेष पूजा-अर्चना की गई। पदमपुरा (बाड़ा) में मुख्य आयोजन श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा (बाड़ा) में गणिनी आर्यिका स्वस्तिभूषण माताजी ससंघ के सानिध्य में भव्य आयोजन हुआ। क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष सुधीर जैन और मंत्री हेमंत सोगानी के नेतृत्व में प्रातः मूलनायक पद्मप्रभ भगवान का अभिषेक और शांतिधारा संपन्न हुई। इसके पश्चात निर्वाण पूजा की गई और 'निर्वाण कांड' के सामूहिक उच्चारण के बीच 21 किलो का निर्वाण लाडू समर्पित किया गया। भव्य महामस्तकाभिषेक और जुलूस भक्ति संगीत और बैंड-बाजों के साथ श्रद्धालुओं का जुलूस कस्बे के मुख्य पद्मप्रभ मंदिर पहुँचा। प्रातः 10:15 बजे से भगवान पद्मप्रभ की विशाल खड्गासन प्रतिमा का पंचामृत महामस्तकाभिषेक प्रारंभ हुआ। श्रद्धालुओं ने जल, चंदन, दुग्ध, दही, घृत, सर्वौषधि और विभिन्न फलों के रसों से अभिषेक कर पुण्य लाभ अर्जित किया। अभिषेक के दौरान ₹कलशा डालो रे डालो रे...₹ जैसे भजनों पर श्रद्धालु झूम उठे। शांतिधारा का सौभाग्य मुनि भक्त दीपक बिलाला को प्राप्त हुआ। आर्यिका स्वस्तिभूषण माताजी धर्मसभा को संबोधित करते हुए गणिनी आर्यिका स्वस्तिभूषण माताजी ने कहा कि श्रद्धा भाव से प्रभु का अभिषेक, शांतिधारा और अष्टद्रव्य से पूजन करने से इस जन्म के साथ-साथ अगला भव (जन्म) भी सुधर जाता है। प्रभु की भक्ति ही आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है। इस अवसर पर मंदिर समिति के संरक्षक ज्ञान चंद झांझरी, उपाध्यक्ष सुरेंद्र पांड्या, सुरेश काला, कोषाध्यक्ष राज कुमार कोठ्यारी सहित बड़ी संख्या में जयपुर और आसपास के क्षेत्रों से आए श्रद्धालु उपस्थित रहे।

प.पू. मुनिकुञ्जर आचार्य 108 श्री आदिसागर जी महाराज (अंकलीकर)

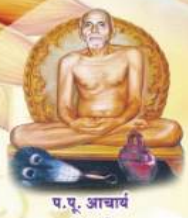

प.पू. आचार्य 108 श्री महावीरकीर्ति जी महाराज

प.पू. वात्सल्य रत्नाकर आचार्य 108 श्री विमलसागर जी महाराज

मूलनायक 1008 श्री आदिनाथ भगवान

प.पू. तपस्वी सम्राट आचार्य 108 श्री सन्मतिसागर जी महाराज

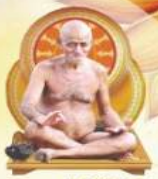

प.पू. संत शिरोमणि आचार्य 108 श्री विद्यासागर जी महाराज

प.पू. आचार्य 108 श्री समयसागर जी महाराज

अष्टाह्निका महापर्व

श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर

मीरा मार्ग, मानसरोवर, जयपुर

श्री 1008

सिद्धचक्र महामण्डल विधान

एवं विश्व शांति महायज्ञ

दिनांक 24 फरवरी से 3 मार्च 2026 तक

प्रातः 6.30 बजे से प्रातः 11.00 बजे तक

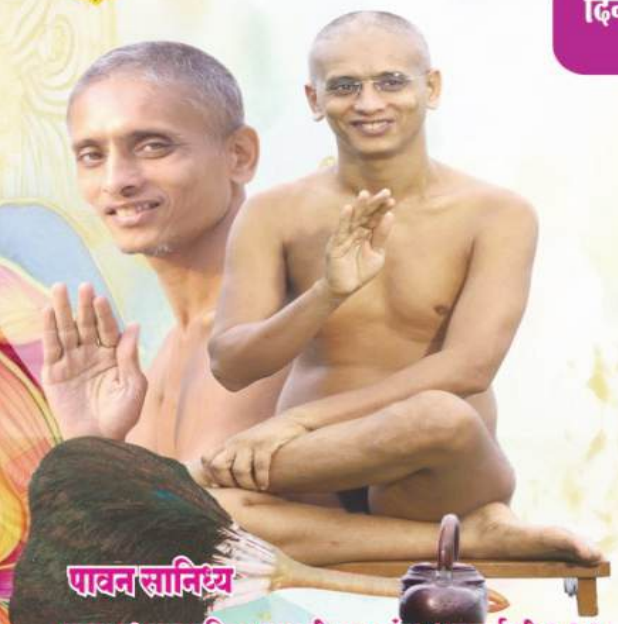

सादर जय जिनेन्द्र !
श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, मीरा मार्ग, मानसरोवर में परम प्रभावक दिव्य तपस्वी राष्ट्र संत, आचार्य श्री 108 सुन्दरसागर जी महाराज ससंघ एवं वात्सल्य मूर्ति, कवि हृदय आचार्य श्री 108 शशांकसागर जी ससंघ के सानिध्य में अष्टाह्निका महापर्व में **श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान** एवं विश्व शांति महायज्ञ दिनांक 24 फरवरी से 3 मार्च 2026 तक का आयोजन किया जा रहा है। इस धार्मिक आयोजन में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर पुण्यार्जन करें एवं गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त करें।

पावन सानिध्य

परम प्रभावक दिव्य तपस्वी राष्ट्र संत, आचार्य श्री 108

सुन्दरसागर जी महाराज ससंघ

विधानाचार्य

विजय वात्सल्य, लखनादौन

पावन सानिध्य

वात्सल्य मूर्ति, कवि हृदय

आचार्य श्री 108 शशांकसागर जी महाराज ससंघ

सहयोग राशि
1100/-रु.
(प्रति व्यक्ति)
भोजन व्यवस्था सहित

कार्यक्रम स्थल
आदिनाथ भवन
मीरा मार्ग, मानसरोवर

आयोजक : श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन समिति, मीरा मार्ग, मानसरोवर, जयपुर

अध्यक्ष	वरिष्ठ उपाध्यक्ष	उपाध्यक्ष	संयुक्त मंत्री	कोषाध्यक्ष	संगठन मंत्री	सांस्कृतिक मंत्री	मंत्री
सुशील पहाड़िया	सुनील बैनाड़ा	जम्बू कुमार सौगानी	डॉ. सुरेश चन्द जैन सोनी	अरूण कुमार जैन	अशोक कुमार सेठी	सीए मनोज कुमार जैन	राजेन्द्र कुमार सेठी
9928557000	98295 61399	76650 14497	95715 99999	7014689216	98288 10828	93145 03618	9314916778

कार्यकारिणी सदस्य- अनिल सौगानी, अरुण कुमार जैन (पाटोदी), अशोक कुमार जैन (छाबड़ा), राजेश काला (एडवोकेट), सुनील कुमार जैन, सुनील काला, विजय जैन (झाँझरी), सहवृत सदस्य-शान्ति विजय गंगवाल, राकेश बाकलीवाल

श्री आदिनाथ महिला जागृति समिति, मीरा मार्ग, मानसरोवर, जयपुर

अध्यक्ष	वरिष्ठ उपाध्यक्ष	संयुक्त सचिव	कोषाध्यक्ष	संगठन सचिव	सांस्कृतिक सचिव	सह सांस्कृतिक सचिव	प्रचार सचिव	सचिव
सुशीला जैन रांवका	श्रीमती स्वर्णकिरण गोधा	श्रीमती निर्मला बाकलीवाल	श्रीमती रेणु पाटनी	श्रीमती ममता जैन श्रीमाल	श्रीमती सुनीता जैन	श्रीमती इन्दु सौगाणी	श्रीमती अनिला बैनाड़ा	रश्मि जैन सांगानेरिया
9982265464	9166191367	9828233224	7597000862	8742023232	7065132609	946038117	9828316565	9414160750

कार्यकारिणी सदस्य - श्रीमती शीला जैन, श्रीमती शान्ति भौंसा, श्रीमती हीरा जैन (गोयल), श्रीमती मधु सेठी, श्रीमती शिल्पी जैन, श्रीमती इन्दु पाण्ड्या, श्रीमती नेहा जैन, श्रीमती सुनीता जैन (छाबड़ा), श्रीमती विजयलक्ष्मी जैन, श्रीमती मन्जू अग्रवाल, श्रीमती सन्तोष जैन (बड़जात्या)

विद्यासागर पाठशाला, मीरा मार्ग, जयपुर

निवेदक : सकल दिगम्बर जैन समाज, मीरा मार्ग, जयपुर

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह) जयपुर मो. 9829050791